

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक

का

प्रतिवेदन

संघ सरकार

1991 की सं० 9 { वार्षिक }

विषय - सूची

पैरा सं०	प्राक्कथन	पृ० सं०
	विहंगवावलोकन	11-111
1.00	प्रस्तावना	1
2.00	पूँजी संरचना	1
3.00	परियोजना का कार्यान्वयन और उत्पादन निष्पादन	1
3.01	परियोजना का कार्यान्वयन	1-3
3.02	क्षमता उपयोग	4
3.03	चिप्पर गृह	5
3.03.1	नरकुल चिप्पर	5
3.03.2	बॉस चिप्पर	6
3.04	कच्ची सामग्री	7-8
3.05	विद्युत आपूर्ति	8-12
3.06	संसाधन - पण्य	12-13
3.07	जनशक्ति का उपयोग	13-16
3.08	सामग्री प्रबन्ध एवं सामान-सूची नियंत्रण	17-18
4.00	वित्तीय स्थिति	20-21
5.00	सारांश	22
	अनुबन्ध क प्रॉसेस फ्लो चार्ट	23

प्रतिकथन

1. भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के प्रतिवेदन, संघ सरकार -1991 की सं0 ।
वाणिज्यिक की प्रस्तावनात्मक टिप्पणियों की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है जिसमें उल्लेख किया गया था कि यह प्रतिवेदन अनेक भागों में प्रस्तुत किया जाएगा ।
2. इस भाग में नागालैण्ड पल्प एण्ड पेपर कम्पनी लिमिटेड के कार्यचालन से सम्बन्धित समीक्षा अन्तर्विष्ट है ।

नागालैण्ड पल्प एण्ड पेपर कम्पनी लिमिटेड

विहंगावलोकन

नागालैण्ड पल्प एण्ड पेपर कम्पनी 14 सितम्बर, 1971 को निगमित की गई थी। इसके पास प्रतिवर्ष 33,000 टन कागज उत्पादन करने की प्रतिष्ठापित क्षमता थी और इसने अक्टूबर 1977 में चालू किए जाने की नियत तारीख के प्रति जुलाई 1982 में वाणिज्यिक उत्पादन आरम्भ किया। 31.3.1991 को कम्पनी की प्राधिकृत एवं प्रदत्त पूँजी क्रमशः 50 करोड़ ₹0 और 48.37 करोड़ ₹0 थी। कागज उत्पादन की सम्पूर्ण परियोजना दोषपूर्ण ढंग से बनाई गई थी और इसलिए आरम्भ से ही प्रचालनात्मक और वित्तीय कठिनाइयों से घिरी रही और इसका प्रचालन अमितव्ययी हो गया।

2. आरम्भ में विनिर्दिष्ट 19.76 करोड़ ₹0 की पूँजीगत लागत बढ़कर 83.73 करोड़ ₹0 हो गई जो मुख्यतः अवस्थिति असुविधाओं, इसके कार्यान्वयन में विलम्ब और पहले मुहैया न की गई सिविल निर्माण कार्यों एवं उपकरण की अतिरिक्त मदों के कारण थी।

¶ पैरा 3.01 ¶

3. प्रतिष्ठापित क्षमता के उपयोग में कमी 81.38 से 97.03 प्रतिशत के बीच रही। यह कमी निम्नलिखित कारणों से थी :-

- ¶क¶ कच्ची सामग्री के रूप में नरकुलों की अनुपलब्धता; ¶पैरा 3.03.1 ¶
- ¶ख¶ पहुँच मार्ग न होने के कारण बाँसों की अधिप्राप्ति में कमी और परिणामस्वरूप बाहर से बाँसों की अधिप्राप्ति जिसके कारण उत्पादन लागत बढ़ गई; ¶ पैरा 3.04 ¶
- ¶ग¶ बाँसों के विकास के लिए जगह का कम अभिग्रहण; ¶पैरा 3.04 ¶
- ¶घ¶ राज्य सरकार द्वारा अनियमित विद्युत आपूर्ति और कोयले से चलने वाले बायलरों के दोषपूर्ण होने के कारण आन्तरिक रूप से विद्युत का नगण्य उत्पादन; ¶पैरा 3.05¶

4. कम्पनी की वित्तीय स्थिति निराशाजनक थी क्योंकि प्रदत्त पूँजी ¶ 48.37 करोड़ ₹0¶ का पहले ही संचित हानि ¶ 180.60 करोड़ ₹0 ¶सेसफायं हो गया था और 31 मार्च 1991 को निवल धन ऋण 142.23 करोड़ ₹0 था। इसके अतिरिक्त कम्पनी की प्रतिकूल वित्तीय स्थिति उधार ली गई निधियों को समय पर लौटाने में अवरोधक बनी और परिणामस्वरूप 34.50 करोड़ ₹0 के शास्तिक ब्याज की देयता बन गई। ¶ पैरा 4.00 ¶

5. कागज की प्रतिष्ठापित क्षमता 33,000 मी.टन थी जिसके लिए 1622 पद संस्वीकृत किये गये थे । 1984-85 से 1990-91 तक की अवधि के दौरान इन पदों के 70 से 78 प्रतिशत पद भरे रहे । परन्तु इस अवधि के दौरान उत्पादन प्रतिष्ठापित क्षमता के 3 और 19 प्रतिशत के बीच रहा जो यह दर्शाता है कि स्टाफ का नियोजन उसकी आवश्यकता से अधिक था । इसके अतिरिक्त , प्रबन्धन समयोपरि भत्ता भी अदा कर रहा था । 1990-91 तक सात वर्षों के दौरान प्रचालन और गैर प्रचालन कर्मियों को अदा किए गए कुल समयोपरि भत्ते की राशि 179.44 लाख रू० बनती थी । ¶ पैरा 3.07.1 से 3.07.3 ¶

6. मालसूची धारिता ¶ भंडार और फालतू पुर्जों ¶ 32 और 116 महीनों के उपभोग के बीच थीं । न तो मालसूची धारिता के लिए कोई प्रतिमान निर्धारित किया गया था और न ही खरीदों को स्थिति के अनुसार नियंत्रित किया गया था जिससे अनुपयोगी भंडारों की धारिता बढ़ गई ; ¶ पैरा 3.08 ¶

7. प्रबन्धन ने नरकुल चिप्परो और डाइजेस्टरो पर 25.90 लाख रू० और चूने की भट्टी के उपकरणों पर 19.54 लाख रू० का अनुत्पादक व्यय उनकी व्यावहारिता की पूर्ण जाँच किये बिना किया था । इसके अतिरिक्त, गैस पाइपलाइन बिछाने के लिए विवादग्रस्त भूमि के " उपयोग के अधिकार " की अनुचित ढंग से व्यवस्था करने के कारण प्रबन्धन ने गैस से चलाये जाने वाले बायलरो के आपूर्तिकर्ताओं को अग्रिम देने के कारण 80 लाख रू० की वित्तीय देयता उठाई ¶ पैरा 3.03.1 और 3.05.2 ¶

1.00 प्रस्तावना

नागालैण्ड पल्प एण्ड पेपर कम्पनी लिमिटेड नागालैण्ड राज्य सरकार के सहयोग में हिन्दुस्तान पेपर कारपोरेशन लिमिटेड { एच पी सी } की सहायक कम्पनी के रूप में { दो के बीच में शेयरधारिता अनुपात 7:1 } प्रतिवर्ष 33,000 टन कागज के उत्पादन के लिए 14 सितम्बर 1971 को निगमित की गई थी । कम्पनी ने वाणिज्यिक उत्पादन जुलाई 1982 से आरम्भ किया ।

2.00 पूँजी संरचना :-

31 मार्च 1991 को कम्पनी की प्राधिकृत और प्रदत्त पूँजी क्रमशः 50 करोड़ ₹0 और 48.37 करोड़ ₹0 थी ।

भारत सरकार ने योजनागत और योजनेतर शीर्षों के अन्तर्गत कम्पनी को समय-समय पर एच पी सी के माध्यम से आवधिक ऋण प्रदान किये । 31 मार्च 1991 को बकाया ब्याज सहित ऋण की कुल राशि 134.03 करोड़ ₹0 थी { ऋण 71.38 करोड़ ₹0 उपचित देय और देय ब्याज 57.99 करोड़ ₹0 और उपचित किन्तु देय नहीं ब्याज 4.66 करोड़ ₹0 } । ईक्विटी और योजनागत शीर्षों के अन्तर्गत प्राप्त 48.37 करोड़ ₹0 और 37.08 करोड़ ₹0 में से कम्पनी ने मुख्यतः भारी रोकड़ हानियों के कारण 2.36 करोड़ ₹0 योजनेतर प्रयोजनों पर लगाया ।

कम्पनी की एक बैंक के साथ 1 करोड़ ₹0 तक की रोकड़ उधार सीमा थी जो नियंत्रक कम्पनी { एच पी सी } द्वारा मानीटर की जा रही थी और प्रतिभूत ऋण निधियों के अन्तर्गत एच पी सी के वार्षिक लेखाओं में दर्शायी जाती थी, इसके प्रति 31 मार्च, 1991 को 3.35 लाख ₹0 बकाया थे ।

3.00 परियोजना का कार्यान्वयन और उत्पादन निष्पादन :-

3.01 परियोजना का कार्यान्वयन :-

19.76 करोड़ ₹0 पर अनुमानित { 1971 } परियोजना का मूल पूँजीगत परिव्यय संशोधित करके 62.12 करोड़ ₹0 { मार्च 1977 } किया गया था जो और संशोधित करके 83.73 करोड़ ₹0 { जुलाई 1982 } कर दिया गया । इसके ब्यौरे नीचे तालिका में दिए गए हैं :-

तालिका - I

₹-लाख ₹0. में ₹

व्यय का मुख्य शीर्ष	मूल अनुमान ₹ 1971 ₹	मार्च 1977 में सरकार द्वारा संस्वीकृत संशोधित अनुमान	जुलाई 1982 में सरकार द्वारा संस्वीकृत संशोधित अनुमान	1977 की अपेक्षा अनुमानों में वृद्धि/कमी	लागत में वृद्धि के कारण
भूमि	1.00	1.00	1.00	-	-
सिविल निर्माण-कार्य	291.90	982.58	1293.40	31.63	₹ i ₹ मुद्रास्फीति
संयंत्र एवं मशीनरी	1405.32	4046.68	4057.12	-	₹ ii ₹ अवस्थिति असुविधाएं जिनमें अतिरिक्त सिविल निर्माण कार्य लागत, परिवहन लागत, आदि अन्तर्गुप्त हैं
प्रारम्भिक फालतू पुर्जे	-	182.98	318.58	74.11	
टाउनशिप	103.00	381.00	957.77	151.38	₹ iii ₹ कार्यचालन पूंजी के लिए मार्जिन धन
परियोजना बनाने की लागत	174.50	513.88	1497.00	191.31	
मार्जिन धन	--	88.00	162.00	84.10	
चूना भट्टी	--	16.00	18.65	16.56	
वाहनीकी, अग्नि शमन ट्रक, बसे आदि	--	--	67.70	--	
	1975.72	6212.12	8373.22	34.79	

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होगा कि भूमि को छोड़कर सभी मदों की लागत में वृद्धि हुई है, भारी वृद्धि 'परियोजना लागत' ₹ वाणिज्यिक उत्पादन आरम्भ होने से पहले किए गए व्यय ₹ में हुई जिसमें मुख्यतः निम्न समाविष्ट हैं :-

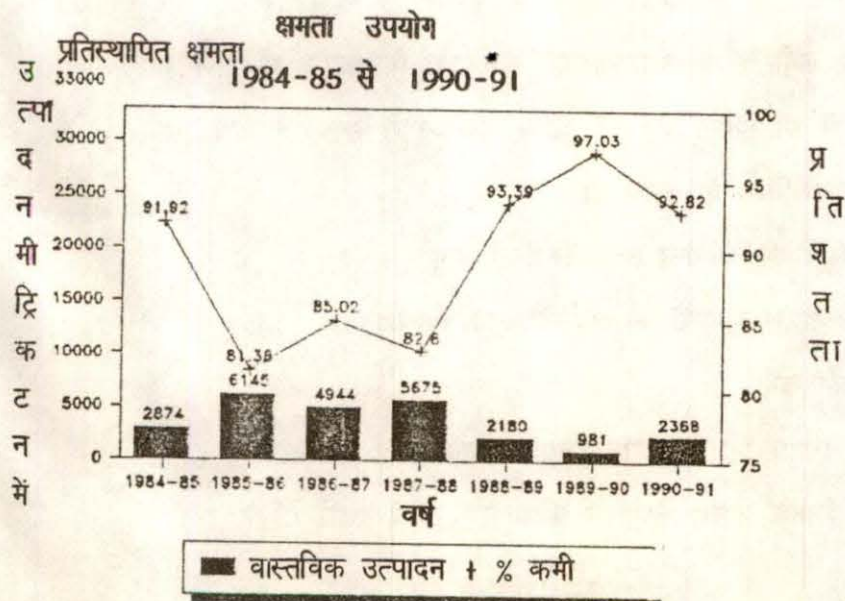
- ₹क₹ प्रारम्भिक और संवर्धनात्मक व्यय
- ₹ख₹ खोलने और चालू करने का व्यय
- ₹ग₹ तकनीकी सेवा व्यय
- ₹घ₹ सामान्य निर्माण प्रभार और
- ₹ङ₹ निर्माण-अवधि के दौरान व्याज ।

प्रबन्धन ने बताया कि मार्च 1990 कि 1971 और 1975 के अनुमानों में भारी अन्तर 1970-71 में तेल की कीमत में विश्व-व्यापी वृद्धि के कारण, एकाएक मुद्रा स्फीति के कारण था ।

परियोजना अक्टूबर 1977 में चालू होनी अपेक्षित थी परन्तु यह जुलाई 1982 में चालू की गई थी । लगभग पाँच वर्षों के विलम्ब के लिए प्रबन्धन द्वारा निम्न कारण बताए गए कि सितम्बर 1989 :-

- परामर्शदाताओं द्वारा आरेखण विलम्ब से देना ;
- डिजाइन को विलम्ब से बनाना ;
- पूर्तिकारों द्वारा कोयले से चलाए जाने वाले बायलरों की विलम्ब से आपूर्ति;
- बायलरों के उत्थापन में विलम्ब
- विलम्बित/ दोषपूर्ण सिविल निर्माण कार्य
- डी एम संयंत्र तथा कोयला सम्भलाई संयंत्र का विलम्ब से चालू किया जाना ;
- जल अन्तर्ग्रहण पम्प गृह और कोयला आदि के भण्डार के लिए भूमि के अधिग्रहण में विलम्ब; और
- वाहक पुल के पूरा होने में विलम्ब

इस प्रकार यह देखने में आएगा कि परियोजना के विलम्बित निष्पादन से न केवल लागत में वृद्धि हुई बल्कि बढ़े हुए उपरिव्ययों के कारण प्रचालन लागत में भी वृद्धि हुई जिससे कम्पनी की जीवन क्षमता पर प्रभाव पड़ा जैसाकि अनुवर्ती पैराग्राफों में बताया गया है । प्रबन्धन द्वारा यह बताया गया था कि जब एच पी सी प्रारम्भिक अवस्था में थी तब परियोजना की कल्पना की गई थी और इस तरह यह योजना बनाने के दौरान और अवस्थिति असुविधाओं के कारण भी परियोजना के सभी पहलुओं की जाँच नहीं कर सकी ।



3.02 क्षमता उपयोग :-

कच्ची सामग्री के निवेश के चरण से कागज तैयार करने की प्रक्रिया अनुबन्ध-1 के प्रोसेस प्लो चार्ट में दर्शाई गई है।

लेखन, छपाई तथा क्राफ्ट कागज की 33,000 मी. ट. की वार्षिक प्रतिष्ठापित/अनुष्ठापित क्षमता के प्रति वास्तविक उत्पादन बहुत कम रहा जैसा कि नीचे दर्शाया गया है :-

तालिका- 2

वर्ष	प्रतिष्ठापित क्षमता ॥ मी.ट. ॥	वास्तविक उत्पादन ॥ मी.ट. ॥	क्षमता उपयोग में कमी ॥ प्रतिशत ॥
1984-85	33,000	2,874	91.92
1985-86	वही	6,145	81.38
1986-87	वही	4,944	85.02
1987-88	वही	5,675	82.80
1988-89	वही	2,180	93.39
1989-90	वही	981	97.03
1990-91	वही	2,368	92.82

* ॥ वि.प.रि. में यथा विनिर्दिष्ट कागज की 33,000 मी. ट. की वार्षिक निर्धारित क्षमता वर्ष में 330 दिनों के लिए 100 मी.ट. के दैनिक उत्पादन पर आधारित थी ॥

1990-91 तक 7 वर्षों के दौरान क्षमता के उपयोग में कमी 81.38 और 97.03 प्रतिशत के बीच थी। यह कमी अनेक प्रचालनात्मक समस्याओं के कारण थी जिनका कम्पनी संयंत्र के चालू होने के समय से ही सामना कर रही थी। प्रबन्धन ने बताया ॥ मार्च 1990 ॥ कि क्षमता के उपयोग में कमी मुख्यतः निम्न के कारण थी :-

- एन ई डी से विद्युत की अपर्याप्त तथा अनियमित आपूर्ति।
 - घटिया कोयले के कारण बायलरो का असन्तोषजनक निष्पादन।
 - कुशल कार्मिकों की कमी
 - 1988-89 और 1989-90 के दौरान उत्पादन कार्यकलापों का निलम्बन।
- मुख्य समस्याएं, जिनके कारण निष्पादन घटिया रहा, नीचे दर्शाई गई हैं।

3.03 चिप्पर गृह :-

संयंत्र में लुग्दी बनाने वाली दो वाहिकाएं थीं एक बॉस के उपयोग के लिए और दूसरी नरकुल के लिए । प्रत्येक में 5 मी. ट. /घं. क्षमता के क्रमशः तीन और दो चिप्पर हैं । 12 मी.ट./घं. की प्रतिष्ठापित क्षमता वाला एक और बॉस चिप्पर दिसम्बर 1986 में चालू किया गया था । इसमें, छः डाइजेस्टर, बॉस और नरकुल, प्रत्येक के लिए तीन-तीन थे प्रत्येक वाहिका के अन्तर्गत दो चिप्पर दो पारियों में चलने थे ।

3.03.1 नरकुल चिप्पर :-

परियोजना इस तरह अभिकल्पित थी कि उसमें कच्ची सामग्री के रूप में बॉस और नरकुल समानुपात में हों । नरकुल वाहिका की परीक्षण जॉच के पश्चात नरकुल वाहिका को इसकी पूर्ण क्षमता पर चलाने के लिए पर्याप्त नरकुल उपलब्ध नहीं था और केवल बॉस वाहिका ही कार्यशील थी । नरकुल एक मौसमी फसल थी और जब समय से काटी और उपयोग में नहीं लाई जाती थी तब वह स्वतः ही जंगल में बदल जाती थी और अपनी उपयोगिता खो देती थी । नागालैण्ड में उपलब्ध नरकुल भी पतले छिल्के और छोटे तथा मुलायम रेशे का था जिसे 4 से 6 माह से अधिक समय के लिए रखा नहीं जा सकता था । इसके अतिरिक्त नरकुल उगाने वाले क्षेत्रों की अनधिगम्यता नरकुल की अपर्याप्त उपलब्धता का एक अन्य कारण था । चूँकि नरकुल उपलब्ध नहीं थे । इसलिए नरकुल वाहिका को अलग कर दिया गया । नरकुल चिप्पर को बॉस चिप्पर में बदलता भी तकनीकी रूप से व्यवहार्य नहीं था । जहाँ तक नरकुल डाइजेस्टर का सम्बन्ध है कुछ अतिरिक्त व्यय से अचल प्रकार के डाइजेस्टर में बदल कर बॉस की कतरनों को मौजूदा नरकुल डाइजेस्टर में पकाया जा सकता था । इस प्रकार नरकुल की अनुपलब्धता के परिणामस्वरूप क्षमता का कम उपयोग हुआ और नरकुल चिप्पर ₹ 4.10 लाख ₹0 और डाइजेस्टर ₹ 21.80 लाख ₹0 पर किया गया व्यय अनुत्पादक सिद्ध हुआ ।

अप्रैल 1981 से जून 1983 तक के दौरान अधिप्राप्त 1137 मी.ट. नरकुल में से केवल 604 मी. ट. की खपत हो सकी और शेष मात्रा, जिसकी कीमत 3.09 लाख ₹0 थी, अनुपयोगी और अविक्रेय हो गई तथा 1986-87 के दौरान उसे बट्टे खाते में डाल दिया गया ।

प्रबन्धन ने बताया ₹ अगस्ता 1991 ₹ कि नरकुल की अधिप्राप्ति परीक्षण आधार पर कागज के उत्पादन के लिए की गई थी । तदनुसार नरकुल के 50% से अधिक के स्टॉक का उपयोग परीक्षण अवधि में किया गया था और यह पाया गया था कि उत्पादन बहुत घटिया था । प्रत्याशा के अनुसार प्रचालन भी स्थिर नहीं किया जा सका । इसके परिणामस्वरूप नरकुल का भण्डारण विनिर्दिष्ट अवधि की तुलना में लम्बी अवधि तक करना पड़ा ।

3.03.2 बॉस चिप्पर :-

बॉसों की खपत और कतरन के उत्पादन में कमी आई थी जैसा कि नीचे दर्शाया गया

है :-

तालिका - 3

वर्ष	बॉसों की खपत	कतरन का उत्पादन	निर्धारित क्षमता	उपयोग की प्रतिशतता
	मी. ट.	मी. ट.	मी. ट.	
1984-85	7,742	7,475	52,800	14.16
1985-86	10,930	10,384	वही	19.67
1986-87	9,022	8,696	वही	16.47
1987-88	12,231	10,968	1,16,160	9.40
1988-89	5,380	4,938	वही	4.20
1989-90	3,757	3,275	वही	2.82
1990-91	6,750	6,139	वही	5.28

टिप्पणी:-

(i) वार्षिक कार्य दिवस = 330

(ii) दिसम्बर 1986 में एक और बॉस चिप्पर के प्रतिष्ठापन के कारण 1987-88 से निर्धारित क्षमता में वृद्धि हुई थी ।

प्रतिष्ठापित क्षमता का कम उपयोग मुख्यतया अनियमित विद्युत आपूर्ति और संभरक साधनों में अन्तर्निहित दोष के कारण था ।

3.04

कच्ची सामग्री :-

कागज की 33,000 मी.ट. की प्रतिष्ठापित क्षमता के प्रति बॉस और नरकुल की आवश्यकता क्रमशः 150 रू0 और 140 रू0 प्रति मी. टन कीमत पर प्रत्येक के लिए 50,000 मी. टन अनुमानित थी । कच्ची सामग्री प्राप्त करने के लिए बॉस उत्पादन के लिए 63 वर्ग मील और नरकुल उत्पादन के लिए 12 वर्ग मील क्षेत्र की आवश्यकता का भी अनुमान लगाया गया था । भूमि राज्य सरकार द्वारा अधिग्रहीत की जानी थी और कम्पनी को हस्तान्तरित की जानी थी । अगस्त 1991 तक सरकार ने बॉस और नरकुल के लिए क्रमशः 35.65 और 11.77 वर्ग मील का क्षेत्र अधिग्रहीत किया था । नरकुलों की अनुपलब्धता के कारण यह कार्यक्षेत्र छोड़ दिया गया था । पट्टे पर लिये गये क्षेत्र में भरण /पहुँच सड़कें न होने के कारण बॉस प्राप्त नहीं किया जा सका । इस प्रकार प्राप्त करने और परिवहन प्रभारों से इतर मुफ्त कच्ची सामग्री के साथ कागज की स्थापना का एक मुख्य कारण गलत सिद्ध हुआ । कम्पनी को बाहर से बॉस खरीदने पड़े और परिणामस्वरूप उत्पादन लागत में वृद्धि हुई ।

प्राप्त करने की 90 रू0 प्रति मी.टन ₹ 1971 ₹ की मूल अनुमानित लागत के प्रति संशोधित अनुमानित लागत 150 रू0 प्रति मी. टन ₹ 1977 ₹ निर्धारित की गई थी । तथापि कम्पनी ने 500 रू0 प्रति मी. टन ₹ 1984-85 ₹, 553 प्रति मी. टन ₹ 1985-86 ₹, 584 रू0 प्रति मी. टन ₹ 1986-87 ₹, 687 रू0 प्रति मी.टन ₹ 1987-88 ₹, 604 रू0 मी. टन. ₹ 1988-89 ₹, 664 रू0 प्रति मी. टन ₹ 1989-90 ₹ और 642 रू0 प्रति मी. टन ₹ 1990-91 ₹ की लागत पर बाहर के स्रोतों से बॉस खरीदा ।

आर्थिक मामलों से सम्बन्धित मन्त्र मंडलीय समिति ने निदेश दिया ₹ जनवरी 1985 ₹ कि कम्पनी की आगे व्यवहार्यता के लिए औद्योगिक लागत और कीमत ब्यूरो को एक विशेष अध्ययन आरम्भ करना चाहिए ।

मार्च 1985 में औद्योगिक लागत और कीमत ब्यूरो की सिफारिशों के आधार पर बॉस की निरन्तर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए सुझाव देने के लिए एक परामर्शदाता नियुक्त किया । परामर्शदाता ने बन पट्टेदारी क्षेत्र, नदी तटों आदि पर कम्पनी द्वारा स्वयं वृक्षारोपण की सिफारिश की ₹ 1985 ₹ । कम्पनी ने मार्च 1987 तक अपने स्वयं के वृक्षारोपण पर 4.03 लाख रू0 खर्च किये परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला ।

प्रबन्धन ने बताया ₹ मार्च 1990 ₹ चूंकि अनियमित विद्युत आपूर्ति और कोयले की अपेक्षित गुणवत्ता की अनुपलब्धता के कारण कम्पनी लक्षित उत्पादन नहीं कर सकी अतः कम्पनी द्वारा वृक्षारोपण का कार्यक्रम नहीं चलाया जा सका । प्रबन्धन ने आगे बताया ₹ अगस्त 1991 ₹ कि प्रायोगिक रूप में कम्पनी द्वारा वृक्षारोपण किया गया था परन्तु उचित भरण सड़कों के अभाव में उसे रोक दिया गया ।

स्वयं के द्वारा वृक्षारोपण पर कम्पनी द्वारा किए गए 4.03 लाख रू० के व्यय में से 3.16 लाख रू० मार्च 1991 तक बट्टे खाते में डाल दिये थे ।

3.05 विद्युत आपूर्ति :

3.05.1 एक फर्म द्वारा आपूर्ति कोयले से चलाये जाने वाले तीन बायलर ₹ 150.90 लाख रू० मूल्य के ₹ मार्च 1981, जुलाई 1982 और जनवरी 1983 में चालू किये गये थे ।

चालू करने के समय से ही बायलरों का निष्पादन संतोषजनक नहीं पाया गया था । बायलरों के घटिया निष्पादन के लिए कम्पनी ने ₹ मार्च 1988 ₹ एच पी सी को निम्न कारण बताये -

- दोषपूर्ण कोयला भरण डिजाइन
- दोषपूर्ण चैन ग्रेट
- दोषपूर्ण प्रेशर पार्ट, और
- दोषपूर्ण स्वचालित नियंत्रण प्रणाली आदि

उपकरण और नियंत्रक कई बार सुधारे/बदले गये परन्तु इन उपायों से बायलर को सतत आधार पर स्वचालित नियंत्रण पर नहीं चलाया गया । कोयला भरण प्रणाली की विफलता का कारण उस गुणवत्ता के कोयले जिसके लिए बायलर डिजाइन किये गये थे, के बजाय घटिया किस्म के कोयले का भरण था जोकि मारधेरिता में उपलब्ध था । इस प्रकार समग्र प्रणाली को हटायी गई और नई कोयला भरण प्रणाली डिजाइन की गई और विभागीय तौर पर परिचालित की गई । इसके अतिरिक्त बायलर सं० 1 और 2 की 4.27 लाख रू० की लागत पर मरम्मत करनी पड़ी थी जबकि बायलर सं० 3 की मरम्मत के लिए विनिर्माताओं को 48.60 लाख रू० अदा किये गये थे ।

चूँकि आन्तरिक विद्युत उत्पादन नगण्य था अतः राज्य सरकार से विद्युत की खरीद की गई । नीचे की तालिका विद्युत आपूर्ति की स्थिति दर्शाती है :-

तालिका - 4

वर्ष	उत्पादित विद्युत लागत {मे. वा. { {लाख रू० में}	प्रति कि. वा. घं. लागत {रू०}	खरीदी गई विद्युत लागत {मे. वा. { {लाख रू० में}	प्रति कि. वा. घं. लागत {रू०}	कुल उपलब्ध विद्युत {मे. वा. {	अनुमानित आवश्यकता {मे. वा. {	कमी { प्रतिशत }	
1984-85	शून्य	-	18424	116.87	0.63	18424	82,870 *	78
1985-86	4293	113.73	21701	142.55	0.66	25994	वही	69
1986-87	3039	139.85	13236	86.46	0.65	16275	वही	80
1987-88	शून्य	-	14574	97.41	0.67	14574	83,097	82
1988-89	शून्य	-	7907	92.85	1.17	7907	82,870	90
1989-90	शून्य	-	8118	54.75	0.67	8118	वही	90
1990-91	शून्य	-	13795	91.94	0.67	13795	वही	83

* अनुमानित आवश्यकता का परिकलन :

{ 9.46 मे वा × 24 घंटे × 365 दिन }
अधिवर्ष होने के कारण 1987-88 के लिए { 9.46 मे वा × 24 घंटे × 366 दिन }

उपरोक्त तालिका से यह देखने में आएगा कि विद्युत की उपलब्धता में 69 और 90 प्रतिशत के बीच थी। इसके अतिरिक्त खरीदी गई विद्युत के लिए अदा की कीमत की तुलना में आन्तरिक विद्युत के नगण्य उत्पादन के कारण उत्पादन की लागत में वृद्धि हुई।

विद्युत आपूर्ति में बार-बार रूकावट और बायलरों में खराबी के कारण यान्त्रिक/विद्युतीय अवरोध भी हुए जैसा कि नीचे दर्शाया गया है :-

तालिका - 5

वर्ष	उपलब्ध कुल घंटे	नष्ट हुए घंटे	उपलब्ध घंटों से नष्ट घंटों की प्रतिशतता	बायलर तथा अनियमित विद्युत आपूर्ति के कारण नष्ट घंटों की प्रतिशतता
1983-84	8,784	6,601	75.15	33.00
1984-85	8,760	6,075	69.35	53.17
1985-86	8,760	5,031	57.43	32.92
1986-87	8,760	6,075	69.35	28.30
1987-88	8,664	6,013	69.40	53.00
1988-89	8,640	7,630	88.31	56.00
1989-90	8,640	8,329	96.40	93.00
1990-91	8,640	7,594	87.89	74.00

3.05.2 बी.आई. सी पी ने टिप्पणी की ॥ मार्च 1985 ॥ कि अनुपयुक्त कायेला भरण डिजाइन के साथ कोयला से चलने वाले बायलरों को घटिया ढंग से डिजाइन किया गया था तथा चल झंझरी में बार-बार खराबी आती थी, नलिकाओं के मरम्मत की जरूरत थी, रख रखाव अपर्याप्त था तथा डी एम जल और घटिया उपकरण समस्याएं थीं । बी आई सी पी ने सिफारिश की कि यदि कोयला से चलने वाले बायलर स्थिर नहीं किए जाते तो कम्पनी को एक गैस से चलने वाले बायलर के विकल्प के लिए पूर्ण लागत विवरण के साथ व्यवहार्यता स्तर का अनुमान अवश्य बनाना चाहिए । और मामला सी सी ई ए को भेजा जाना चाहिए क्योंकि गैस से चलने वाले बायलर में सरल प्रचालन का अतिरिक्त लाभ है ।

परिणामस्वरूप भारत सरकार ने 11 करोड़ ₹0 की लागत पर गैस से चलने वाले बायलर वाली आधुनिकीकरण की योजना का अनुमोदन किया । कम्पनी ने भूमिगत पाइप लाइन जिसकी कीमत, आरम्भ में ते. प्रा. गै. आ. द्वारा वहन की जानी थी, और जो दस वार्षिक किशतों में कम्पनी से वसूल की जानी होगी, के माध्यम से गैस की आपूर्ति के लिए तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग ॥ ते. प्रा. गै. आ. ॥ के साथ एक करार किया ॥ जुलाई 1986 ॥ । कम्पनी द्वारा इस प्रयोजन हेतु भूमि के उपयोग का अधिकार ॥ उ. का. अ. ॥ प्राप्त करने के बाद ते. प्रा. गै. आ. द्वारा पाइपलाइन को निर्माण आरम्भ किया जाना था ।

कम्पनी ने 5.95 करोड़ ₹0 की लागत पर गैस से चलने वाले एक बायलर की आपूर्ति तथा कोयले से चलने वाले बायलर को गैस से चलने वाले बायलर में बदलने के लिए फर्म 'क' को एक आशय पत्र भी दिया ॥ दिसम्बर 1987 ॥ । फर्म को दिसम्बर 1987, जनवरी/फरवरी 1988 में 80 लाख ₹0 का अग्रिम दिया गया था ।

पाइपलाइन बिछाने के लिए अपेक्षित भूमि के कुल 13.5 कि.मी. क्षेत्र में से 8 कि.मी. क्षेत्र आसाम और नागालैण्ड सरकारों के बीच विवादास्पद क्षेत्र था । कम्पनी ने नागालैण्ड के ग्रामीणों के अधिकार की विवादास्पद भूमि के उपयोग का अधिकार ग्राम परिषदों से प्राप्त कर लिया। कम्पनी के अधिकारियों द्वारा किए जा रहे सर्वेक्षण का आसाम सरकार ने विरोध किया । मामले पर उस समय बातचीत चल रही थी जबकि आसाम गैस कम्पनी लिमिटेड ॥ आ. गै. क. लि. ॥ के माध्यम से गैस प्राप्त करने की सम्भावना की निम्न कारणों से जून 1989 में जाँच की गई :-

- ॥ i ॥ आ. गै. क. लि. आसाम सरकार से उ. का. अ. प्राप्त करेगी ।
- ॥ ii ॥ ते. प्रा. गै. आ. से ठेका सामान्त कर दिया जाएगा और आ. गै. क. लि. के माध्यम से गैस की आपूर्ति के लिए नया ठेका किया जाएगा ।
- ॥ iii ॥ ते. प्रा. गै. आ. का व्यय अवधारित किया जाएगा और कम्पनी द्वारा अदा किया जाएगा, और

॥ 11/॥ ते.प्रा.गै.आ. द्वारा प्राप्त की गई पाइपें आ.गै. कं. लि. को दे दी जायेंगी ।

ते.प्रा.गै.आ. ने कम्पनी को सूचित किया ॥ अगस्त 1989 ॥ कि उप ठेकेदारों से सम्भावित मुआवजा दावों के अलावा ठेका समाप्त करने का दावा 167.50 लाख ₹0 था । मामले को अन्तिमरूप दिया जा रहा था ।

प्रबन्धन ने बताया ॥ अगस्त 1991 ॥ कि वे भारत सरकार द्वारा नई पुनरुद्धार योजना के अनुमोदन पर ते.प्रा.गै. आ. द्वारा किए गए दावे के मित्रतापूर्ण निपटान के लिए उनसे बातचीत करेंगे । इसके अतिरिक्त, गैस पाइपलाइन के लिए ते.प्रा. गै. आ. द्वारा प्राप्त की गई पाइपों का उपयोग उनके द्वारा अपने उद्देश्य के लिए किया जा रहा था ।

इसी बीच कम्पनी ने फर्म 'क' से गैस से चलने वाले बायलर पर अपना काम निलम्बित करने का अनुरोध किया । तथापि, फर्म ने सूचित किया कि उसने उप बिक्रेताओं को 3.50 करोड़ ₹0 का आदेश दे दिया था । किसी भी स्थगन का परिणाम ब्याज, शास्ति, मूल्य वृद्धि प्रभार आदि का भुगतान होगा जो कम्पनी को वहन करना होगा । मामले पर निर्णय लिया जाना था ॥ अगस्त 1991 ॥ । इस प्रकार ते.प्रा.गै.आ. तथा फर्म को ठेका देने से पहले उ.के.अ. के मामले के निपटान में प्रबन्धन की विफलता के परिणामस्वरूप विपुल वित्तीय देयता हुई ।

प्रबन्धन ने बताया ॥ मार्च 1990 ॥ कि एन पी पी सी को उ.का.अ. देने के लिए जनवरी 1990 में असम सरकार से अनापत्ति प्रमाण पत्र प्राप्त कर लिया गया था और पर्यावरण निर्वाधन के लिए प्रस्ताव फरवरी 1990 में असम सरकार द्वारा भारत सरकार को भेज दिया गया था । असम सरकार ने 2.05 लाख ₹0 की लागत पर अगस्त 1990 में उ.का. अ. प्रदान कर दिया ।

3.06 संसाधन पण्य :

पल्प मिल में दाहन प्रक्रिया ॥ टीकाष्टिसाइजिंग प्रॉसेस ॥ और रसायन घोल तैयार करने के लिए चूने की आवश्यकता होती है । वि.प.रि. में कुल 18.65 लाख ₹0 की लागत पर कोयले से चलने वाली वर्टीकल शाफ्ट चूना भट्टी का प्रतिष्ठापन विनिर्दिष्ट था जिसके प्रति प्रत्येक भट्टी से प्रतिदिन 28 टन चूना उत्पादन करने के लिए कुल 19.54 लाख ₹0 की लागत पर 2 चूना भट्टी खरीदी गई थी ॥ जनवरी 1985 ॥ । तथापि चूँकि चूना पत्थर परियोजना क्षेत्र से 400 से 500 कि.मी. की दूरी पर उपलब्ध था और चूँकि मारघेरिता में उपलब्ध कोयला भी चूना पत्थर जलाने के लिए उपयुक्त नहीं था इसलिए चूना भट्टियों के प्रतिष्ठापन के प्रस्ताव का विचार दिसम्बर 1985 में छोड़ दिया गया था ।

इस प्रकार चूना भट्टियों के प्रतिष्ठापन की व्यवहार्यता की जाँच न कर पाने में प्रबन्धन की विफलता के कारण 19.54 लाख रु० का व्यय अभी तक अनुत्पादक रहा है ।

प्रबन्धन ने बताया कि अगस्त 1991 में कि इनके निपटान के लिए नए सिरे से कार्यवाही की जा रही थी ।

3.07 जनशक्ति का उपयोग :

3.07.1 निम्न तालिका मार्च 1991 को समाप्त होने वाले सात वर्षों के दौरान निर्धारित क्षमता के लिए जनशक्ति की आवश्यकता, वस्तुतः नियोजित जनशक्ति और वास्तविक उत्पादन की प्रतिशतता दर्शाती है :-

तालिका - 6

वर्ष	जनशक्ति			उत्पादन		
	संस्वीकृत पद	वास्तविक संख्या	प्रतिशतता	निर्धारित क्षमता	वास्तविक उत्पादन	प्रतिशतता
		कि संख्या कि			कि टन कि	
1984-85	1622	1135	70	33,000	2,874	9
1985-86	वही	1158	71	वही	6,145	19
1986-87	वही	1144	71	वही	4,944	15
1987-88	वही	1193	74	वही	5,675	17
1988-89	वही	1224	75	वही	2,180	7
1989-90	वही	1198	74	वही	981	3
1990-91	वही	1271	78	वही	2,368	7

जबकि उत्पादन निर्धारित क्षमता के 3 और 19 प्रतिशत के बीच था, जनशक्ति का वास्तविक नियोजन 70 और 78 प्रतिशत के बीच था और इस प्रकार आवश्यकता से काफी अधिक था । परियोजना के घटिया निष्पादन के लिए प्रबन्धन द्वारा अपनी रिपोर्ट कि 1987-88 कि में अन्य कारणों के अलावा कुशल/अनुभवी जनशक्ति की अनुपलब्धता बताया गया था ।

3.07.2 निम्न तालिका 1990-91 को समाप्त होने वाले 7 वर्षों के दौरान मिलवार उपलब्ध और वस्तुतः उपयोग किए गए श्रम घंटे दर्शाती है ।

तालिका - 7

वर्ष	संयंत्र/मिल	उपलब्ध श्रम घंटे	उपभुक्त श्रम घंटे	उपयोग की प्रतिशतता
1984-85	चिपिंग संयंत्र	79872	39470	49
1985-86		77376	32294	42
1986-87		77376	21193	27
1987-88		77376	29553	38
1988-89		79872	11236	14
1989-90		51840	7782	15
1990-91		51840	22518	43
पल्प मिल				
1984-85		94848	20173	21
1985-86		129792	39122	30
1986-87		119808	27040	23
1987-88		129792	44796	35
1988-89		124800	15114	12
1989-90		195840	15254	8
1990-91		195840	27766	14
पेपर मिल				
1984-85		199680	67646	34
1985-86		274560	115512	42
1986-87		269568	80964	30
1987-88		264576	84027	32
1988-89		309504	36897	12
1989-90		457920	31906	7
1990-91		457920	61374	13

उपरोक्त तालिका से यह देखने में आएगा कि जनशक्ति का उपयोग 7 और 49 प्रतिशत के बीच था।

प्रबन्धन ने बताया कि मार्च 1990 में चिपिंग प्लांट, पल्प मिल तथा पेपर मिल में जनशक्ति के उपयोग में कमी मुख्यतया उनके चालू होने के समय से ही लक्षित उत्पादन प्राप्त न करने के कारण थी जैसा कि पूर्ववर्ती पैराग्राफ में उल्लेख किया गया है, प्रबन्धन ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में उल्लेख किया था कि परियोजना का घटिया निष्पादन अन्य कारणों के अतिरिक्त कुशल/अनुभवी जनशक्ति की अनुपलब्धता के कारण था।

3.07.3 यद्यपि जनशक्ति के उपयोग में कमी बहुत अधिक थी लेकिन कम्पनी प्रचालन और गैस प्रचालन स्टाफ दोनों को समयोपरि भत्ता का भुगतान कर रही थी जैसा कि नीचे तालिका में दर्शाया गया है :-

तालिका - 8

वर्ष	पेपर का उत्पादन (मी. ट.)	₹ लाख ₹0 में									
		प्रचालन स्टाफ को सकल मजदूरी	प्रचालन स्टाफ को समयोपरि भत्ता	गैर प्रचालन को सकल वेतन	गैर प्रचालन को समयोपरि भत्ता	कुल मजदूरी बिल से समयो-परि भत्ताकी प्रतिशतता	कुल वेतन मजदूरी से समयोपरि भत्ता	प्रदत्त कुल समयोपरि भत्ता	कुल वेतन तथा मजदूरी से समयोपरि भत्ता की प्रतिशतता		
						प्रचालन स्टाफ	गैर प्रचालन स्टाफ				
1984-85	2874	97.41	22.70	37.56	12.22	23.3	32.5	134.97	34.92	25.9	
1985-86	6145	120.02	24.95	41.39	13.43	20.8	32.4	161.41	38.38	23.8	
1986-87	4944	130.78	14.50	46.42	7.33	11.1	15.8	177.20	21.83	12.3	
1987-88	5675	160.92	22.83	51.82	6.57	14.2	12.7	212.74	29.40	13.8	
1988-89	2180	173.00	9.57	58.34	5.56	5.5	9.5	231.34	15.13	6.5	
1989-90	981	209.53	5.93	114.53	4.79	4.18	2.83	324.06	10.72	3.30	
1990-91	2368	236.40	22.47	127.74	6.59	5.16	9.50	364.14	29.06	7.98	

उपरोक्त तालिका से यह देखने में आया कि :-

1987-88 और 1989-90 को छोड़कर गैर प्रचालन स्टाफ को समयोपरि भत्ते के भुगतान की प्रतिशतता प्रचालन स्टाफ की अपेक्षा काफी अधिक थी,

1984-85 में 2874 मी. ट. उत्पादन के प्रति प्रचालन स्टाफ को समयोपरि भत्ता के रूप में 22.70 लाख ₹0 का भुगतान किया गया था जबकि 1986-87 के दौरान 4944 मी. ट. उत्पादन के प्रति 14.50 लाख ₹0 का भुगतान किया गया था। प्रबन्धन ने बताया कि मार्च 1990 में संयंत्र के सभी अनुभागों में प्रचालन स्टाफ और गैर प्रचालन स्टाफ दोनों में समयोपरि काम पर लगाने को कम करने के लिए कदम उठाए गए हैं। तथापि, 1990-91 के दौरान प्रचालन स्टाफ और गैर प्रचालन स्टाफ दोनों को समयोपरि भत्ते के भुगतान में पिछले दो वर्षों में प्रदत्त राशि की अपेक्षा पर्याप्त वृद्धि हुई यद्यपि तालिका 6 के अनुसार पेपर का उत्पादन निर्धारित क्षमता का केवल 7% था।

3.08 सामग्री प्रबन्ध एवं सामान सूची नियंत्रण :-

कम्पनी ने कच्ची सामग्री और भण्डार की विभिन्न मदों की निम्नतम, अधिकतम और पुनःआदेश देने के स्तरों को निर्धारित करके सामान सूची नियंत्रण की कोई प्रणाली निर्धारित नहीं की थी ।

नीचे की तालिका 31 मार्च 1991 को समाप्त होने वाले 7 वर्षों के दौरान सामान सूची धारिता की स्थिति दर्शाती है :-

तालिका - 9

₹ लाख ₹0 में ₹

वर्ष	कच्ची सामग्री			रसायन			ईंधन			भण्डार एवं फालतू पुर्जे		
	अन्त स्टॉक	खपत	माह की खपत के रूप में सम सामान सूची	अन्त स्टॉक	खपत	माह की खपत के रूप में सामान सूची	अन्त स्टॉक	खपत	माह की खपत के रूप में सामान सूची	अन्त स्टॉक	खपत	माह की खपत के रूप में सामान सूची
1984-85	58.66	70.28	10	76.99	95.29	10	28.12	112.29	3	356.95	126.63	34
1985-86	56.64	175.46	4	68.17	131.62	6	38.13	251.80	2	269.69	102.01	32
1986-87	10.09	145.66	1	31.85	83.69	5	26.49	139.70	2	243.37	63.81	46
1987-88	68.76	116.01	7	46.47	154.25	4	57.64	114.06	6	249.08	79.11	38
1988-89	33.91	44.98	9	19.23	59.21	4	33.62	56.11	7	250.80	38.45	78
1989- 0	11.44	28.22	5	14.68	49.91	4	20.05	35.65	7	258.85	26.78	116
1990-91	13.68	57.15	3	37.95	139.95	3	10.75	105.11	1	250.67	48.72	62

टिप्पणी :- खपत और अन्तस्टॉक में बीमा फालतू पुर्जे शामिल हैं ।

यह देखने में आएगा कि सामान धारिता, विशेष कर भण्डार और फालतू पुर्जे, बहुत अधिक थे और इसके परिणामस्वरूप पूँजी का अवरोधन हुआ । प्रबन्धन ने बताया ₹ मार्च 1990 ₹ “ हमें सामान्य धारिता की अपेक्षा अधिक सामग्री रखनी पड़ती है क्योंकि नागालैण्ड जैसे सुदूर स्थानों में अल्प समय में सामग्री प्राप्त करना व्यावहारिक रूप से काफी मुश्किल है ” । इस धारिता के परिणामस्वरूप भण्डार बेशी और अनुपयोगी हो गया जैसा कि नीचे दर्शाया गया है :-

तालिका - 10

वर्ष	रसायन			कोयला एवं ईंधन			भण्डार एवं फालतू पुर्जे			लाख रु० में अन्तःस्टाक से अनुपयोगी भण्डार की प्रतिशतता			उत्पादन
	खपत	अन्तःस्टाक	अनुपयोगी	खपत	अन्तःस्टाक	अनुपयोगी	खपत	अन्तःस्टाक	अनुपयोगी	रसायन	ईंधन	भण्डार	मी. ट.
1984-85	95.29	76.99	उ.न.	112.29	28.12	उ.न.	126.63	356.95	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	2874
1985-86	131.62	68.17	उ.न.	251.80	38.13	उ.न.	102.01	269.69	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	6145
1986-87	83.69	31.85	3.23	139.70	26.49	1.74	63.81	243.37	22.13	10.14	6.57	9.09	4944
1987-88	154.25	46.47	3.23	114.06	57.64	1.74	79.11	249.08	27.86	6.95	3.02	11.19	5675
1988-89	59.21	19.23	3.23	56.11	33.62	1.74	38.45	250.80	34.29	16.80	5.18	13.67	2180
1989-90	49.91	14.68	1.76	35.65	20.05	0.04	26.78	258.85	39.44	11.99	0.20	15.24	981
1990-91	139.95	37.72	2.94	105.11	10.15	0.23	48.72	250.67	48.28	7.79	2.27	19.29	2368

टिप्पणी - खपत और अन्तःस्टाक में बीमा फालतू पुर्जे शामिल हैं ।

उपरोक्त तालिका से यह देखने में आयेगा कि अप्रयोज्य भंडारों और फालतू पुर्जों की प्रतिशतता अनेक वर्षों से बढ़ती जा रही थी ।

4.00 वित्तीय स्थिति

निम्नलिखित तालिका 1990-91 को समाप्त पांच वर्षों के लिये कम्पनी की वित्तीय स्थिति दर्शाती है :

तालिका - II

विवरण	1986-87	1987-88	1988-89	1989-90	लाख रु में 1990-91
1. पूंजी एवं देयताएं					
क. शेयरधारियों की निधि					
i. प्रदत्त पूंजी	4665.38	4665.38	4837.38	4837.38	4837.38
ii. आरक्षित निधि एवं अधिशेष	15.00	15.00	1122.00	1122.00	15.00
ख. ऋण निधि					
अप्रतिभूत	6293.82	6538.24	7138.24	7138.24	7138.24
ग. प्राक्धानों सहित व्यापार देय एवं चालू देयताएं	3806.93	5178.03	5886.85	7611.54	9593.04
जोड़	14781.13	16390.65	18984.47	20709.16	21583.66
II. परिसम्पत्तियाँ					
घ. सकल ब्लाक	7282.05	7383.74	7456.02	7428.78	7430.86
ङ. घटाएं: मूल्यह्रास	2875.47	3510.92	4153.88	4761.77	5392.57
च. निवल ब्लाक	4406.58	3872.82	3302.14	2667.01	2038.29
छ. अन्य मूर्त परिसम्पत्तियाँ	1068.62	1167.97	836.24	873.82	1470.37
ज. बटूटे खाते डाले जाने वाले विविध खर्च	55.85	47.52	36.69	25.87	15.05
झ. संचित हानियाँ	9250.08	11308.34	14809.40	17142.46	18059.95
जोड़	14781.13	16396.65	18984.47	20709.16	21583.66
नियोजित पूंजी	1460.69	₹-₹240.87	₹-₹1691.83	₹-₹3986.85	₹-₹ 5970.48
निवल धन	₹-₹ 4625.55	₹-₹6675.48	₹-₹8886.71	₹-₹11208.95	₹-₹ 14222.62
ज. पूर्वाधि समाप्तोत्तम के बाद वर्ष का हानि	2319.31	2058.26	2394.05	2333.07	2024.49

- टिप्पणी :-
1. नियोजित पूंजी निवल ब्याज और कार्यचालन पूंजी की द्योतक है ।
 2. निवल धन अमूर्त परिसम्पत्तियों को घटाकर प्रदत्त पूंजी और आरक्षित निधि तथा अधिशेष का द्योतक है ।

उपरोक्त से यह देखने में आएगा कि :-

1990-91 के अन्त में 48.37 करोड़ रू० की प्रदत्त पूँजी के प्रति संचित हानि 180.60 करोड़ रू० थी ।

निवल धन ऋणात्मक प्रवृत्ति लिए हुए था और 31 मार्च 1991 के अन्त में ऋण 142.23 करोड़ रू० था ।

जबकि हानि 1986-87 तथा 1987-88 के दौरान 23.19 करोड़ रू० तथा 20.58 करोड़ रू० की तुलना में 1988-89 तथा 1989-90 के दौरान 23.94 करोड़ रू० तथा 23.33 करोड़ रू० तक बढ़ गई थी, वहाँ सभी पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में 1990-91 के दौरान हानि 20.24 करोड़ रू० तक कम हो गई थी ।

लेखापरीक्षा में यह देखा गया था कि भारी हानियों के कारण कम्पनी समय से मूलधन और ऋणों पर ब्याज की अदायगी नहीं कर सकी जिसके परिणामस्वरूप इसको शास्तिक ब्याज के लिए बढ़ी हुई देयता उठानी पड़ी जैसा कि नीचे तालिका में दर्शाया गया है :-

वर्ष	शास्तिक ब्याज * (लाख रू० में)
1983-84	18.13
1984-85	83.28
1985-86	192.76
1986-87	315.13
1987-88	454.47
1988-89	616.54
1989-90	793.63
1990-91	975.78

* इनका लेखाओं में प्रावधान नहीं किया गया था ।

5.00 सारांश

33,000 मी. ट. कागज उत्पादन की निर्धारित क्षमता वाली परियोजना, जो अक्टूबर 1977 में चालू होने थी, ने जुलाई 1982 में वाणिज्यिक उत्पादन आरम्भ किया। इसके परिणामस्वरूप 1977 के अनुमानों की अपेक्षा लागत में 2161.10 लाख ₹ की वृद्धि हुई।

परियोजना कच्ची सामग्री, विद्युत तथा कुशल जन-शक्ति की उपलब्धता से सम्बन्धित अयर्थवादी अभिधारणा के साथ आरम्भ की गई थी।

दोषपूर्ण उपकरण खरीदे गए थे और उनके प्रतिष्ठापन में विलम्ब हुआ था। उनकी मरम्मत पर अतिरिक्त लागत उठाई गई थी।

उपरोक्त उल्लिखित कारणों के परिणामस्वरूप बहुत ही कम क्षमता उपयोग और परिणामतः उच्च लागत के कारण कम्पनी ने आरम्भ से ही हानि उठाई।

31.3.1991 को कम्पनी की संचित हानि 180.60 करोड़ ₹ थी और इसका निवल धन ₹-₹ 142.23 करोड़ ₹ था।

कम्पनी को लाभप्रद बनाने के लिए प्रबन्धन अथवा सरकार के पास कोई व्यावहारिक योजना नहीं है।

नई दिल्ली

दिनांक

4 FEB 1992

पी. के. सरकार.

॥ पी. के. सरकार ॥

उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक

एवं

अध्यक्ष, लेखापरीक्षा बोर्ड

प्रतिहस्ताक्षरित

सि. जि. सोमैया

नई दिल्ली

दिनांक :

14 FEB 1992

॥ सि. जि. सोमैया ॥

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक

अनुबन्ध - क

प्रोसेस फ्लो चार्ट

